# उपसंहार

# उपसंहार

गद्य को कवियों की प्रतिभा की कसौटी कहा गया है। निराला ने स्वयं अनामिका में अपने को - गद्य में और पद्य में समान्यस्त कहा है। निराला एक श्रेष्ठ काव्य रचनाकार के अतिरिक्त महान उपन्यासकार, कहानीकार, पत्रकार, बीकनी-लेखक तथा अनुवादक के रूप में हिन्दी जगत से परिचित हैं। उन्होंने एक साथ विविध विधाओं को अपनाया तथा सफलतापूर्वक उसका निर्वाह किया। यह उनका वैशिष्ट्य है। उनके गद्य-साहित्य में यथा अवसर जो ओजस्विता तथा व्यंग्य का तीखापन प्राप्त होता है, वह प्रेरणास्पद है।

निराला ने विविध भाषाओं के साहित्य का गहन चिंतन और मनन किया था, यह संकेत उनकी रचनाओं में मिलते हैं। कहीं-कहीं उनके विचार असाहित्यिक हो गये हैं। प्रबंध-प्रतिभा की भूमिका में वे कहते हैं कि, "लेखों में अज्ञान, हिंकड़ी, असाहित्यिकता के भी निदर्शन हैं। मैं चाहता तो छपते समय कुछ अंशों में उनकी नोकें मार देता, पर मनुष्य ज्ञानी नहीं इसलिए दुर्बलता की पहचान मैंने रहने दी। निराला कितने स्पष्टवादी थे, यह उक्त वाक्य से दिखायी देता है। उनका निरालापन यहां दिखायी देता है। उनका साहित्य हमें एक नयी दिशा का दर्शन कराता है।

निराला के गद्य-साहित्य के अन्तर्गत उपन्यासों में - अप्सरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती, चोटी की पकड़, काले कारनामे, बेमेली, इन्दुलेखा आदि; कहानियों में लिली, देवी, सखी, चतुरी चमार, सुकुल की बीवी आदि। औपन्यासिक रेखाचित्रों में बिल्लेसुर बकरिहा और कुल्लीभाट; निबंधों में प्रबंध पद्म, प्रबंध प्रतिभा, चाबुक, चयन, संग्रह एवं अनूदित अनेक ग्रंथ इन सबमें उनकी एक विशिष्ट विचारधारा स्पष्ट रूप से दिखायी देती है।

सामाजिक, धार्मिक, राजकीय एवं साहित्यिक क्षेत्र में निराला के क्रांतिकारी विचारों को विशेष स्थान मिला है। एक नयी दिशा दी है। समाज की गंभीर समस्याओं का हल साहित्य द्वारा ही सुझाया था। साहित्य की तरह सामाजिक क्षेत्र में भी उनके विचारों ने क्रांति की, समाज के तमाम दकियानूसी रीति-रिवाजों पर वे कबीर की तरह बरस पड़े। जाति-पांति के बंधन उन्हें कभी मान्य नहीं थे। वर्ण-भेद की उन्होंने जगह-जगह धज्जियां उड़ायी हैं। दो हजार वर्षों के हिन्दू समाज के पतन का खाका खींचते हुए उन्होंने समाज में व्याप्त गंदगी और संड़ांध के सभी कारणों की चर्चा की है और उनके सुधार के उपाय सुझाये हैं। निराला ने उन सभी जातियों के चरम उत्थान के स्वप्न देखे थे जो सदियों से पद-दलित रहीं।

निराला द्वारा रचित उपन्यास - अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा - ये पूर्ण उपन्यास हैं और शेष चार - चमेली, चोटी की पकड़, काले कारनामे और इंदुलेखा - ये अपूर्ण हैं। इनके उपन्यासों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है - स्वच्छन्दतावादी उपन्यास और यथार्थवादी उपन्यास। अप्सरा, अलका, निरुपमा, प्रभावती स्वच्छन्दतावादी एवं रोमांटिक उपन्यास हैं। सभी रोमांटिक उपन्यासों की कथावस्तु प्रेम-संबंधी हैं। इनमें छायावादी कल्पना-प्रियता का गहरा रंग है।

निराला में उपन्यास लिखने की कला और प्रतिभा दोनों थी। निराला के उपन्यास-लेखन पर प्रेमचंद और शरत् दोनों का प्रभाव दिखायी देता है। उनमें प्रेमचंद जैसा वस्तुवाद भी है और शरत् जैसी नारी-उन्मुखता और रोमांटिक वृत्ति भी। सम-सामयिक कृतियों की कुछेक प्रवृत्तियां `अप्सरा` में देखी जा सकती हैं। स्वच्छन्दतावादी होते हुए भी आदर्श-प्रधान है। निराला की प्रमुख विशेषताएं संघर्ष-प्रियता, अखिलित व्यक्तित्व, निर्भीकता आदि का अंकन `अलका` में हुआ है। `प्रभावती` कथ्यकालीन ऐतिहासिक चित्र है। साथ ही आंचलिक चित्र भी सहृदयतापूर्वक अंकित है। उपन्यास में उस युग की कथा है जिसमें पृथ्वीराज और जयचंद की फूट के कारण देश

निखर रहा था । `निरुपमा` में ग्रामीण वातावरण तथा शोषण के चित्र खूब हैं । निरुपमा नायिका का चरित्र-चित्रण बड़ा प्रभावोत्पादक हुआ है । `अप्सरा` और `प्रभावती` में उन्होंने गीतों को भी स्थान दिया है जो पात्रों की मन:स्थिति का सुंदरता से प्रकट करते हैं ।

`चोटी की पकड़` में बंगाल के जमींदारों की विलासिता तथा प्रजा पर उनके अत्याचारों का वर्णन है । `काले कारनामे` में जमींदारों, अधिकारीवर्ग की काली करतूतों का सुंदरता से चित्रण किया गया है । `चमेली` में निराला की विद्रोही प्रकृति चरमोत्कर्ष पर पहुंच गयी है । इसमें ग्रामीण वातावरण अत्यन्त सजीव हो उठा है । `इंदुलेखा`, यह निराला का अंतिम उपन्यास है । यह एक सामाजिक उपन्यास है ।

उपन्यासों में सामान्यत: उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग की समस्याओं का वर्णन हुआ है । उनके अधिकांश उपन्यास नायिका-प्रधान हैं । नारी पात्रों में नारी-सुलभ गुणों के अतिरिक्त स्वाभिमान, दृढ़ता, संघर्षप्रियता, साहस आदि गुणों का उल्लेख हुआ है । निराला की ग्रामीण नारी में विद्रोह तथा प्रतिशोध की अद्भुत क्षमता है । `चमेली` में नारी-पात्रों में प्रतिकार की उत्कट भावना है जो पुरुषों में नहीं है । पुरुषों के अत्याचारों के प्रति निराला की नारियां क्रांतिकारिणी और प्रतिद्वंद्विनी हैं । निराला का व्यक्तित्व पुरुष पात्रों से नहीं, नारी-पात्रों से ही प्रस्फुटित हुआ है । इसलिए निराला के नारी-पात्रों को सबल नारी-पात्र कहा जा सकता है । नारी विषयक उच्च विचार निराला के उदार मन का और गहरे सामाजिक चिन्तन का परिचय देते हैं । उपन्यासों के पुरुष पात्रों में प्राय: यथार्थवादी प्रवृत्ति प्रतिफलित हुई है । निराला के उपन्यासों के ग्राम्य वातावरण के चित्रण में तत्कालीन ग्रामीण जीवन और परिस्थितियां खुलकर उभर आई हैं ।

देश-काल चित्रण और चरित्र-चित्रण पात्रों के कथोपकथन के माध्यम से हुआ है । भाषा शैली पात्रों के भाव और अनुभूति का अनुकरण करती है । भावों की सही अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने कभी उर्दू, फारसी तथा प्रान्तीय बोलियों के

शब्दों की भी सहायता ली है । भाषा प्राय: सरल और सर्वग्राह्य है । काव्यात्मक भाषा के माध्यम से प्रकृति वर्णन और रूप वर्णन अत्यन्त सजीव हो उठा है । निराला ने कहीं-कहीं ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक शैली का उपयोग किया है ।

निष्कर्षत: निराला के उपन्यास के बारे में कह सकते हैं कि उनके उपन्यास उज्ज्वल नारी चरित्र वाले, चरित्र-प्रधान, सामाजिक समस्या से परिपूर्ण, अलौकिक आलंकारिक भाषा, सुंदर शैली और मनोरंजक है । `अप्सरा` से लेकर `काले कारनामे` तक निराला ने हिन्दी कथा-साहित्य की प्रगतिशीलता एवं प्रायोगिक विविधता का जो परिचय प्रस्तुत किया है, उनमें टैगोर की युग-चेतना साकार हो उठी है ।

निराला के गद्य-साहित्य में दो औपन्यासिक रेखाचित्र भी हैं - कुल्लीभाट और बिल्लेसुर बकरिहा । हास्यपूर्ण ढंग से घटनाओं का वर्णन करके निराला ने कुल्लीभाट के जीवन और व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है । बिल्लेसुर बकरिहा, इसमें ग्रामीण जीवन चित्रित किया गया है । गांववालों के अंदर पाये जाने वाले अंधविश्वास, गरीबी, संकुचित दृष्टिकोण आदि का यथार्थवादी दृष्टि से चित्रण किया गया है । किसानों का पूरा चित्र इसमें उभरकर अपना रंग लाया है । भाषा इतनी सजीव है कि अपने प्रवाह में प्राणों को घेरकर चलती है ।

रेखाचित्रों में निराला की हास्य-व्यंग्यमयी शैली का प्रयोग विशेषत: उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय है । उस समय निराला के अतिरिक्त महादेवी ने रेखाचित्रों की रचना में रुचि ली थी । महादेवी ने सामाजिक यथार्थ के उद्घाटन के संदर्भ में पात्रों की वैयक्तिक विशेषताओं के प्रतिफलन को महत्वपूर्ण समझा जहां निराला ने तथ्यों को सजीव बनाने के लिए अपने जीवन और व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया । निराला ने उनके माध्यम से यह सिद्ध किया है कि साधन न होने पर भी लगन और कठोर परिश्रम से सफलता प्राप्त की जा सकती है । इसमें उर्दू शब्दों और ग्रामीण शब्दों की अधिकता है । संस्कृत एवं अंग्रेजी के शब्दों का बहुत कम प्रयोग हुआ है ।

कुल्लीभाट में अधिकतर प्रत्यक्ष शैली को स्थान मिला है और बिल्लेसुर बकरिहा में अप्रत्यक्ष शैली की प्रमुखता को सहज लक्षित किया जा सकता है ।

निराला के कहानी-संग्रह हैं - लिली, सखी, सुकुल की बीबी, चतुरी चमार और देवी । उन्होंने सामाजिक, संस्मरणात्मक और दार्शनिक-धार्मिक कहानियां लिखीं । ज्योतिर्मयी, कमला, श्यामा, अर्थ, प्रेमिका परिचय, परिवर्तन, सुकुल की बीबी, गजानन शास्त्रिणी, कला की रूपरेखा, क्यों देखा, देवी आदि श्रेष्ठ कहानियां हैं । चतुरी चमार सर्वश्रेष्ठ कहानी है ।

कहानियों में राजनीति, धर्म, विधवा विवाह, अछूतोद्धार, उच्छृंखल प्रेम, पति-पत्नी का प्रेममय जीवन आदि विषयों पर चर्चा की गयी है । पात्र अधिकांशत: उच्च तथा मध्यम वर्ग के हैं । हास्य और व्यंग्य कहानियों में हैं । इनमें वर्णन और चरित्र की प्रधानता है । अधिकांश कहानियां नायिका-प्रधान हैं । कहीं-कहीं नायिकाओं का चित्रण बड़ा ही रोमांटिक हुआ है । कहानी-साहित्य में प्राय: उनका अपना चरित्र अधिक आया है । देवी और चतुरी चमार यथार्थ कहानियां हैं ।

निराला की प्रारंभिक कहानियां यथा समय `मतवाला` में प्रकाशित होती थीं । निराला की `दो दाने` शीर्षक कहानी `नयी कहानियां` के दीपावली विशेषांक (१९६१) में प्रकाशित हुई थी । यह कहानी भी समाज के शोषण और अनाचार को प्रकाश में लाती है । उनकी भाषा शैली में विषयानुसार परिवर्तन हुआ है । कुछ कहानियों की भाषा शैली आलंकारिक और भावात्मक है । निराला की कहानियों में चित्रित यथार्थ बोध और व्यक्ति-वैचित्र्य आज के संदर्भ में एक अभिनव मोड़ है ।

हिन्दी कथा साहित्य में निराला का स्वर सबसे अलग सुनायी देता है । अपने पूर्ववर्ती कहानीकारों की कहानियों की समीक्षा करते हुए निराला ने `लिली` कहानी-संग्रह की भूमिका में लिखा है - `मुझसे पहले वाले हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानी-

लेखक इस कला को कितनी दूर, उत्कर्ष तक पहुंचा चुके हैं । मैं पूरे मनोयोग से समझने का प्रयत्न करके भी नहीं समझ सका । समझता तो शायद उनसे पर्याप्त-शक्ति प्राप्त कर लेता और पतन के भय से इतना न घबराता ।" उनका कथा-साहित्य अपनी उपलब्धियों और सीमाओं, दोनों विशिष्ट एवं अप्रतिम हैं । "साहित्य के नवीन युग-पथ पर निराला की अंक संसृति गहरी और स्पष्ट, उज्ज्वल और लक्ष्यनिष्ठ रहेगी । इस मार्ग के हर फलक पर उसके चरण का चिह्न और हर शूल पर उनके रक्त का रंग है ।"[1] बाल्यकाल से ही उन्हें साहित्य के प्रति अगाध श्रद्धा और साहित्य सेवा के प्रति असीम अनुराग था । उन्होंने शैशवावस्था से ही बंगला भाषा में कहानियां लिखना प्रारंभ कर दिया था ।

निराला ने व्यंग्य और हास्य के माध्यम से सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं के जो अनुभवप्रवण चित्र प्रस्तुत किये हैं, उनमें वे प्रेमचंद से आगे की बात कह गये हैं । कहानियों में सामाजिक जीवन पर जो व्यंग्य मिलते हैं, वे अनेक हैं; पर निराला की व्यंग्यात्मक प्रतिभा कहीं भी लोकमंगल-विधायकता से निरपेक्ष नहीं है । उनका विद्रोह और उनकी क्रांतिकारिता, जो कथाकृतियों में प्रतिफलित हुई है, वह अवश्य प्रेमचंद से बढ़कर है और समाधान निराला ने प्रस्तुत किये हैं; उनमें अवश्य उनकी सामाजिक चेतना नये युगबोध से प्रेरित है । रूढ़िवादी सामाजिक बंधनों को तोड़ने का साहस-भरा उद्घोष सर्वप्रथम निराला ही करते हैं । इसलिए कथा-साहित्य के क्षेत्र में वे अभिनंदनीय हैं । अंत में हम यह स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि निराला का कहानी-साहित्य एक समाजवादी प्रेरणास्रोत है ।

हिन्दी निबंध-साहित्य में भी निराला का योगदान महत्वपूर्ण है । उनके निबंध-संग्रह हैं - प्रबंध पद्म, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक, चयन, संग्रह । निराला ने साहित्यिक, सामाजिक, संस्मरणात्मक जीवनीपरक, दार्शनिक-धार्मिक निबंध आदि की रचना की । उनकी भाषा शैली उनके व्यक्तित्व का मर्मस्पर्शी परिचय देती है ।

---

१- पथ के साथी ; महादेवी वर्मा, पृ० ७०

उर्दू के शब्दों का प्रयोग स्वतंत्रतापूर्वक हुआ है । प्रबंध-पद्म में विचारात्मक साहित्यिक एवं समाज के विकास एवं चिंतन की झलक दिखायी देती है । 'चाबुक' के निबंध आलोचनात्मक हैं । प्रबंध-प्रतिमा में सभी पर ठेसनी चली है । विचार और विवेचन में सूक्ष्मता है । चुभनेवाले व्यंग्य और तीखा मजाक महत्वपूर्ण दर्शनीय है । निराला का निबंध गांधीजी से बातचीत अद्वितीय है । भाषा एवं राजनीति का दार्शनिक विवेचन करते हुए उनकी भाषा सहज ही व्यंग्यपूर्ण एवं गंभीर हो गयी है ।

कुछ निबंधों में उनकी सूक्ष्म विवेचना शक्ति का परिचय तो मिलता ही है; साथ ही साहित्यिक आलोचना की व्यक्तित्व-प्रधान व्यंग्यात्मक शैली का भी दर्शन होता है । निराला के उपन्यास, कहानियां जैसे हिन्दी-जगत के लिए महत्वपूर्ण हैं, वैसे ही उनके निबंध हिन्दी-साहित्य की महत्वपूर्ण सम्पत्ति है । मेरे मतानुसार सम-सामयिक निबंधकारों की तुलना में निराला के निबंध उच्च कोटि के हैं क्योंकि उनके निबंधों की तुलना में हिन्दी के किसी भी निबंधकार को स्थान नहीं मिल सकता है ।

निबंध-साहित्य में निराला के निबंध साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, दार्शनिक, सभी दृष्टियों से लोकमंगल का मार्ग प्रशस्त करते हैं । उनके निबंध-साहित्य में समाजवादी चिंतन की धारा स्पष्ट रूप से दिखायी देती है ।

भक्त ध्रुव, भक्त प्रह्लाद, भीष्म, महाराणा प्रताप - ये चार जीवनियां निराला द्वारा रचित हैं । वस्तुत: निराला को प्राचीन कथा को युग के अनुरूप ढालने में पर्याप्त सफलता मिली है । भक्त ध्रुव की भूमिका से स्पष्ट है,। उसकी रचना में दो उद्देश्य रहे हैं - देश के बालकों के चरित्र को ऊंचा उठाने के लिए पौराणिक गाथाओं में से एक आदर्श बालक के चरित्र को प्रस्तुत करना; तथा अपने युग में प्रचलित धार्मिक कट्टरता का निराकरण करने के लिए ईश्वर-प्राप्ति के सरल उपाय का निर्देशन करना निराला ने इन उद्देश्यों को ध्रुव के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । महाराणा प्रताप और भक्त ध्रुव में चरित् नायक के दुर्बल और सबल पक्षों का विवरण महत्वपूर्ण है । इनमें मुहावरों और लोकोक्तियों का भी पर्याप्त प्रयोग हुआ है ।

निराला ने चरित्र-चित्रण की विविध शैलियां अपनायी हैं। कहीं-कहीं तुलनात्मक शैली का भी प्रयोग किया है।

भाषा सरल और व्यावहारिक है। उर्दू शब्द और वाक्यों के प्रयोग से भाषा को प्रभावशाली बनाने में सहयोग हुआ है। वास्तव में भावानुसार शैली परिवर्तन उनकी उल्लेखनीय विशेषता है। निराला द्वारा रचित जीवनियां जीवनी-कला की कसौटी पर सही उतरती है। इन जीवनियों में चित्रण की प्रधानता है और कवि का सत्य के प्रति आग्रह भी परिलक्षित होता है। "चित्रण की दृष्टि से निराला यथार्थवाद के समर्थक और समाधान की दृष्टि से वैज्ञानिक है। कवि होने के बावजूद उनके कथा-साहित्य में कल्पना का निरुद्देश्य प्रयोग नहीं मिलता है। आज के कलावादी युग में उनके चरित्र पिछड़े हुए और आउट-आफ-डेट लग सकते हैं; पर वे भारतीय जन-जीवन का सच्चा स्वरूप पेश करते हैं, इसमें कोई शक नहीं।"[1]

`रवीन्द्र-कविता-कानन और पंत` और `पल्लव` निराला की आलोचनात्मक कृतियां हैं। मतवाला, सुधा, माधुरी आदि पत्रिकाओं में आलोचनात्मक लेख भी लिखे हैं। रवीन्द्र-कविता-कानन में निराला ने अपने समकालीन कवि रवीन्द्रनाथ के साहित्य के विविध पक्षों पर आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया है। इसकी भाषा भावानुरूप है। अलंकारों की प्रमुखता रही है। हिन्दी साहित्य में रवीन्द्र-साहित्य की इतनी गूढ़ व्याख्या निराला द्वारा ही प्रथम बार की गयी है। `पल्लव` की भूमिका में कुछ आक्षेप पंतजी ने निराला पर किये थे। प्रत्युत्तर में निराला ने `पंत और पल्लव आलोचनात्मक` कृति लिखी। इसमें निरालाजी का व्यक्तित्व प्रबल रूप से प्रकट हुआ है। आलोचना-साहित्य में इन कृतियों का स्थान महत्वपूर्ण है।

पत्रिकाओं में निराला अत्यन्त निर्भयतापूर्वक हिन्दी के साहित्यकारों और उनकी रचनाओं में खटकने वाली बातों पर समालोचना लिखा करते थे। निराला की भूमिकाएं उनके गद्य और काव्य-ग्रंथों के उचित मूल्यांकन के लिए मानदंड का काम करती हैं।

---

१- आधुनिक हिन्दी कथा-साहित्य और चरित्र-विकास ; डा० बेचन, पृ० १४२

निराला के गद्य-साहित्य के अन्तर्गत अनूदित गद्य रचनाओं का भी महत्व-पूर्ण स्थान है । अनुवाद कार्य में निरालाजी की रुचि यानी युग-चेतना का सहज परिणाम । द्विवेदी-युग में इस दिशा में प्रगति हुई थी । उन्होंने बंकिम के ग्यारह उपन्यासों, विवेकानन्द के तीन ग्रंथ और रामकृष्ण वचनामृत का हिन्दी में अनुवाद किया था । उनका अनुवाद साहित्य अगाध ज्ञान का द्योतक है । उस युग में इस क्षेत्र में निराला का योगदान सबसे अधिक एवं प्रशंसनीय है ।

वस्तुत: निराला की कहानियां भावना और कल्पना से जीवन को गति देती हैं । उपन्यास चिंतन को चेतना प्रदान करते हैं तो संस्मरण एवं रेखाचित्र अनुभूति की मार्मिकता से परिचित कराते हैं । आदर्श का सहज संभाव्य आग्रह एवं यथार्थ की जीवनदर्शिता लेकर निराला के अन्तर्मन का कथाकार सहज रूप में प्रकट हुआ है । निराला में एक महान साहित्यकार के सभी गुण विद्यमान थे । स्वाभिमानी के अतिरिक्त वह बड़े उदार विचार के थे । उनका दृष्टिकोण मानवतावादी था और वह जीवन यात्रा में कोई भेदभाव नहीं मानते थे ।

> " निराला का परवर्ती यथार्थवादी साहित्य व्यंग्य, विनोद, आक्रोश एवं घोर यथार्थ का साहित्य है । निराला ने व्यंग्य किये हैं और व्यंग्य के सभी शिष्ट तथा संस्कृत रूप निराला के कथा-साहित्य में भी पड़े हैं । `देवी` और `चतुरी चमार` का व्यंग्य निखरा हुआ है । व्यंग्यों द्वारा जीवन और जगत की वास्तविक स्वाभाविक स्थिति का स्पष्टीकरण निराला की महत्वपूर्ण देन है ।" डा० बरसानेलाल चतुर्वेदी के शब्दों में "हिन्दी में निरालाजी के समान कोई व्यंग्यकार नहीं हुआ है ।"[1]

निरालाजी की साहित्य-कला में इतना वैविध्य है जो उच्च कोटि के कलाकार में ही पाये जा सकते हैं । उनके गद्य-साहित्य में यथा अवसर जो औजस्विता

---

१- हिन्दी साहित्य में हास्य-रस ; डा० बरसानेलाल चतुर्वेदी, पृ० १५२

तथा वैचारिक तीक्ष्णता दिखायी देती है, वह निश्चय ही हिन्दी लेखकों के लिए महत्वपूर्ण एवं प्रेरणास्पद है । ऐसा लगता है मानो कथा-साहित्य में लेखक सुधार का सत्-संकल्प लेकर अग्रसर हुआ है । वास्तव में प्रसाद आदि समकालीन छायावादी साहित्यकारों में निराला का गद्य-साहित्य सर्वाधिक वैविध्यपूर्ण है । गुणों की दृष्टि से भी उनका गद्य-साहित्य समकालीन साहित्यकारों के साहित्य से किसी प्रकार भी कम नहीं है । "उनके कथा-साहित्य में उभरने वाले प्रकृति संह प्रेमचंद, वृंदावनलाल वर्मा, नागार्जुन और फणीश्वरनाथ `रेणु` के प्रकृति-चित्रण से किसी भी प्रकार पीछे नहीं है ।"[1]

निराला की रचनाओं में रहस्यवाद, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि सभी वाद समाहित हैं । उन्हें महाप्राण, मृत्युंजय, मतवाला, अमृत-पुत्र, अपराजेय आदि अनेक विशेषणों से विभूषित किया गया है । उनमें दार्शनिक की खोज, सन्देहवादी की संशयशीलता, भक्त-प्रेमी की आत्म-विह्वलता, क्रांति की क्रूरता और तीव्रता, शूरवीर की तेजस्विता और जीवन के उत्ताप की पीड़ा एक साथ घुलमिल गयी है ।[2] देव और दानव के संघर्ष से प्रस्फुटित निराला का साहित्यिक व्यक्तित्व विराट रूप है ।

निराला की गद्य भाषा में विदेशी शब्दों का भी महत्वपूर्ण स्थान है । छायावादी लेखकों में केवल वही ऐसे लेखक हैं जिन्होंने अपने गद्य में उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया है । ये शब्द उनकी भाषा में इतने घुलमिल गये हैं कि उनका पृथक अस्तित्व अनुभव नहीं होता । उनकी यह विशेषता है कि उन्होंने सामाजिक स्थिति के विकास में महत्वपूर्ण और प्रगतिशील भूमिका निभायी है । उन्होंने विवेकानन्द की विचारधारा को आत्मसात किया जो सामाजिक उत्पीड़न और अन्याय के विरुद्ध अपने साहित्य में प्रकट हुआ । उनके साहित्य में "पराधीन भारत का आक्रोश भी है और स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् के घोर असंतोष

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

१- निराला ; देवेंद्र शर्मा, पृ० १५

२- महाप्राण निराला ; गंगाप्रसाद पाण्डेय, पृ० २२६

की कटु व्यंजना भी ।"[1]

निराला प्रसंगानुकूल भाषा लिखने में सिद्धहस्त थे। हिन्दी भाषा की नयी क्षमता उनके गद्य में प्रकट हुई है और उनके ऊर्जस्वित व्यक्तित्व ने कथा-साहित्य को नयी जीवन-दृष्टि प्रदान की। कथा-साहित्य को काव्य-रचना की तरह सरस बनाने का उनका उपक्रम स्तुत्य है। निराला के गद्य की अन्यतम विशेषता है हास्य। उसमें हास्य के कल-कल के नीचे प्राय: करुणा और आक्रोश की धारा बहती रहती है। "निरालाजी के हास्य की यह विशेषता है कि वह घटना-प्रधान नहीं, वे विचित्र घटनाओं, दृश्यों, व्यक्तियों आदि का चित्रण करके हमें केवल हंसाना नहीं चाहते। हास्य और व्यंग्य सबको आनन्द देता है। उसकी शिष्टता, स्वाभाविकता और निर्दोषता सर्वप्रिय है।"[2] निराला की कथा-कृतियों में हास्य-व्यंग्य प्रचुर मात्रा में है।

निराला में समाजवाद और राष्ट्रीयता का स्फुरण था। निरर्थक संस्कारप्रियता, रूढ़िवादिता आदि के बंधनों को ध्वंसकर उन्होंने समाजवाद और राष्ट्रीयता का स्फुरण किया। राजनीतिक अत्याचारों एवं सामाजिक कुरीतियों के प्रति निराला ने विद्रोह किया और तीखे व्यंग्य के माध्यम से उन्होंने अपनी कथा-कृतियों में क्रूरतम आघात किये हैं।

निराला विद्रोही थे। उनके विद्रोही स्वर ने जाति-पाँति, वंश-कुल, रूढ़ि-परम्परा आदि का घोरतम विरोध किया। निरालाजी का अभिनंदन साहित्यिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, हर तरह के जुल्म के विरुद्ध चुनौती-भरी आवाज लगाने वाले के रूप में होता है। साहित्य-सृजन के साथ-साथ निराला ने अपने युग की राजनीति में भी बराबर भाग लिया। अर्थ-शून्य पांडित्य का प्रदर्शन न कर निराला यथार्थ के प्रति और कला के प्रति सदा सच्चे बने रहे।

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

१- निराला की साहित्य और साधना ; डा० विश्वंभरनाथ उपाध्याय, पृ० १९

२- स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य ; डा० रामविलास शर्मा, पृ० १९५

हिन्दी साहित्य के महारथियों में निराला का नाम अग्रगण्य है । उनकी रचनाओं में उनके जीवन का प्रतिबिम्ब हमें दिखायी देता है । लेखक की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि वह व्यक्तित्व का पूर्ण विकास अपनी रचनाओं में कर सका । हिन्दी-साहित्य में वह विरल ही है । गद्यकार के रूप में उनका अपना विशिष्ट मौलिक स्थान है । "भाषा की प्रौढ़ता, प्रवाहिकता, सामर्थ्य, शक्ति, अभिव्यक्ति की विशदता, विचारों की गंभीरता और दिशा, शैली की सरलता, शिष्टता, प्रभावोत्पादकता, अक्षुति, ओज आदि गुणों की महता आदि का परिचय निराला के गद्य-साहित्य में होता है ।"[१]

निराला छायावादी-युग के सर्वाधिक कुशल और सचेत कलाकार हैं । सामाजिक और साहित्यिक, दोनों क्षेत्रों में निराला ने जर्जर रूढ़ियों को ध्वस्त किया और नये विकल्प प्रस्तुत किये । वस्तुत: उनका साहित्य जीवन की वह अनुभूति है जिसमें साहित्यिक उद्भावनाओं के साथ ही साथ त्याग का अटूट सम्बन्ध है ।

एक गद्यकार के रूप में निराला बहुचर्चित, बहुप्रशंसित गद्यकार हैं । इनके साहित्य में विभिन्न वर्गों में व्याप्त व्यक्ति की कुंठा और भावनाओं का प्रभाव-पूर्ण विश्लेषण मिलता है । अनेक विषमताओं के बीच में भी आज का मानव किस अटूट आस्था के साथ जीवन-संघर्ष में रत है, इसका विश्वसनीय विश्लेषण इनके साहित्य में देखने को मिलता है । लेखक ने समाज की विविध समस्याओं को लेकर कलम चलायी है ।

निराला निस्सन्देह एक सिद्धपुरुषाश्रय । किन्तु उनकी ओर देखने से ऐसा लगता था कि महाकवि के जीवन में एक ऐसा अभाव रह गया है जिसकी पूर्ति के लिए उनकी आत्मा विद्रोह करती रही, जिसकी रेखाएं उनके मुखमंडल पर दिखायी देती थीं । निराला का गद्य-साहित्य हिन्दी-साहित्य में अप्रतिम एवं उच्च स्थान का अधिकारी है । निराला के गद्य-साहित्य ने हिन्दी-जगत् को वह उपहार दिया है जो न केवल साहित्य की रत्नराशि में परिणत है वरन् संस्कृति-शिल्पिणी की शिल्प-परंपरा का अपूर्व गौरवमय निर्वाह है ।

---

१- निराला : व्यक्तित्व और कृतित्व ; सं० डा० प्रेमनारायण टंडन, पृ० ५५